अध्याय 2: पतंग

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	कविता के साथ	8 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	कविता के आसपास	3 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

'सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

हल

कवि आलोक धन्वा ने भादो की मूसलाधार बौछारों के जाने के बाद शरद ऋतु के आगमन का सुंदर चित्रण किया है।

भादो की तेज बारिश समाप्त होने के बाद —

• सवेरा हुआ — 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा', अर्थात् भोर की लालिमा खरगोश की लाल आँखों जैसी कोमल और चमकीली है।

• शरद ऋतु पुलों को पार करते हुए एक नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते, घंटी बजाते, चमकीले इशारों से बुलाते हुए आई।

• आकाश इतना मुलायम हो गया कि पतंग ऊपर उठ सके — दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज उड़ सके, दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके, बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके।

• चारों ओर सीटियों, किलकारियों और तितलियों की नाजुक दुनिया शुरू हो गई।

इस प्रकार कवि ने शरद ऋतु के स्वच्छ, उज्ज्वल और उमंगभरे वातावरण का जीवंत चित्रण किया है।

उत्तर: भादो के बाद शरद ऋतु का आगमन हुआ — लाल भोर, चमकीला आकाश, मुलायम हवा, और बच्चों की पतंगों व किलकारियों से भरी दुनिया।

प्रश्न 2

सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए 'सबसे हलकी और रंगीन चीज', 'सबसे पतला कागज', 'सबसे पतली कमानी' जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

हल

कवि ने पतंग के लिए इन अतिशयोक्तिपूर्ण विशेषणों का प्रयोग निम्नलिखित कारणों से किया है —

1. पतंग की नाज़ुकता और हल्केपन को उजागर करना: पतंग वास्तव में बहुत हलकी होती है, तभी वह हवा में उड़ सकती है। 'सबसे हलकी' विशेषण उसके इसी गुण को रेखांकित करता है।

2. बच्चों के स्वप्नों का प्रतीक: पतंग बच्चों की उमंगों और सपनों का प्रतीक है। उसकी रंगीनियत बच्चों के रंग-बिरंगे सपनों को व्यक्त करती है — 'सबसे रंगीन चीज'।

3. कागज और कमानी की कोमलता: पतंग का कागज अत्यंत पतला होता है और बाँस की कमानी बेहद लचीली। इनके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि ऊँचाई की तलाश तब होती है जब साधन बहुत नाजुक हों।
4. व्यंजनात्मकता: ये विशेषण केवल पतंग का नहीं, बल्कि बचपन और स्वप्नशीलता का वर्णन करते हैं — जो जितनी नाज़ुक और हल्की होती है, उतनी ही ऊँची उड़ती है।
कवि यह संदेश देता है कि बच्चों के सपने और उमंगें — जो देखने में कोमल और नाजुक लगती हैं — वे ही सबसे ऊँची उड़ान भरते हैं।

उत्तर: पतंग की नाज़ुकता, हल्केपन और रंगीनियत के माध्यम से कवि बचपन की उमंगों और सपनों का प्रतीकात्मक वर्णन करता है — जो जितना नाजुक, उतनी ऊँची उड़ान।

प्रश्न 3

बिंब स्पष्ट करें — सबसे तेज बौछारें गयीं भादो गया सवेरा हुआ खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा शरद आया पुलों को पार करते हुए अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए घंटी बजाते हुए जोर-जोर से चमकीले इशारों से बुलाते हुए और आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए कि पतंग ऊपर उठ सके।

हल

इन पंक्तियों में कवि ने कई सुंदर बिंबों (imagery) का प्रयोग किया है —
1. दृश्य बिंब (Visual Imagery):
• 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' — शरद ऋतु के भोर की लालिमा की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है। यह कोमलता और नयी ताज़गी का बिंब है।
• 'अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए' — शरद का मानवीकरण (Personification) किया गया है; शरद को एक उत्साहित बच्चे के रूप में चित्रित किया है जो चमकदार साइकिल पर आता है।
• 'आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए' — स्पर्श बिंब (Tactile) के साथ दृश्य बिंब — आकाश के निर्मल और खुले होने का चित्र।
2. श्रव्य बिंब (Auditory Imagery):
• 'घंटी बजाते हुए जोर-जोर से' — साइकिल की घंटी के माध्यम से शरद के आगमन की ध्वनि।
• 'चमकीले इशारों से बुलाते हुए' — यह दृश्य और श्रव्य दोनों बिंबों का मेल है।
3. स्पर्श बिंब (Tactile Imagery):
• 'आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए कि पतंग ऊपर उठ सके' — आकाश के मुलायम होने का अनुभव स्पर्श बिंब है।
कुल मिलाकर इन पंक्तियों में शरद ऋतु को एक जीवंत, उत्साही व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो अपने चमकीले व्यक्तित्व से पूरी प्रकृति और बच्चों के मन को आनंदित कर देता है।

उत्तर: इन पंक्तियों में दृश्य, श्रव्य और स्पर्श बिंब हैं — खरगोश-आँख से लाल भोर, साइकिल की घंटी से श्रव्य बिंब, और मुलायम आकाश का स्पर्श बिंब। शरद का मानवीकरण किया गया है।

प्रश्न 4

'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' — कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है।

हल

कपास एक अत्यंत कोमल, मुलायम, हल्की और सफेद वस्तु है। कवि ने 'कपास' का प्रतीक बहुत सोच-समझकर चुना है।

बच्चों और कपास का संबंध निम्नलिखित रूपों में बन सकता है —

1. कोमलता का प्रतीक: बच्चे जन्म से ही कोमल होते हैं, जैसे कपास। उनका मन, शरीर और भावनाएँ — सब कुछ कपास जैसा मुलायम होता है।
2. निर्मलता और पवित्रता: कपास सफेद और निर्मल होती है, उसी तरह बच्चे भी मन से निर्मल और पवित्र होते हैं — उनमें कोई कपट नहीं होता।
3. हल्केपन का संकेत: कपास हल्की होती है और हवा में उड़ती है — बच्चे भी जीवन के बोझ से मुक्त, हलके मन से जीते हैं। उनके पाँव इसीलिए 'बेचैन' हैं — वे दौड़ते-भागते हैं।
4. उमंग और उड़ान: कपास की तरह बच्चे भी उड़ना चाहते हैं — पतंग के साथ ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं।
5. जन्मजात सहजता: 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' — यह बताता है कि बच्चों में सहजता, निश्चिंतता और कोमलता जन्मजात होती है; यह उनके स्वभाव का अभिन्न हिस्सा है।

उत्तर: कपास बच्चों की जन्मजात कोमलता, निर्मलता, हल्केपन और उमंग का प्रतीक है — ठीक उसी तरह जैसे कपास मुलायम, हल्की और सफेद होती है।

प्रश्न 5

'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' — बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?

हल

'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं / अपने रंध्रों के सहारे' — इन पंक्तियों में कवि ने बच्चों और उड़ान के बीच एक गहरा और प्रतीकात्मक संबंध स्थापित किया है।

बच्चों का उड़ान से संबंध —

1. कल्पनाशीलता की उड़ान: बच्चे केवल पतंग नहीं उड़ाते, वे स्वयं भी उड़ते हैं — अपनी कल्पनाओं, सपनों और उमंगों के सहारे। 'रंध्रों के सहारे' — यानी हर छिद्र, हर साँस, पूरा अस्तित्व उड़ान में भागीदार है।
2. स्वच्छंदता और मुक्ति: उड़ान बंधनों से मुक्ति का प्रतीक है। बच्चे भय, बोझ और सीमाओं से परे जाकर स्वतंत्र रूप से जीते हैं — यही उनकी उड़ान है।
3. शारीरिक और मानसिक उड़ान: जब बच्चे छतों पर दौड़ते हैं, पतंग की डोर थामते हैं, तो उनका पूरा शरीर रोमांचित होता है — सिर्फ पतंग नहीं, वे स्वयं भी उड़ रहे होते हैं।
4. ऊँचाइयों को छूने की चाह: 'पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज एक धागे के सहारे' — बच्चे सबसे ऊँचा उड़ाना चाहते हैं, जो उनके जीवन में महत्वाकांक्षा और उत्साह का प्रतीक है।
5. जीवन का उत्सव: उड़ना केवल भौतिक क्रिया नहीं — यह जीवन को उत्सव की तरह जीने का ढंग है।

उत्तर: बच्चे पतंग के साथ-साथ अपनी कल्पनाओं, उमंगों और रोमांच के सहारे स्वयं भी उड़ते हैं — यह उड़ान स्वतंत्रता, स्वप्नशीलता और जीवन को उत्सव की तरह जीने की भावना का प्रतीक है।

प्रश्न 6

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए — (क) छतों को भी नरम बनाते हुए दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?

हल

'दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए' — यह एक अत्यंत सुंदर और मौलिक बिंब है।
मृदंग एक वाद्य-यंत्र है जिसे बजाने पर चारों दिशाओं में मधुर ध्वनि गूँजती है।
तात्पर्य —
1. बच्चों की किलकारियाँ, सीटियाँ और उल्लास इतना भरपूर होता है कि वह चारों दिशाओं में एक उत्सव की लय की तरह फैल जाता है — जैसे मृदंग बजता है।
2. 'बजाना' यहाँ ध्वनि और उत्साह दोनों का प्रतीक है — बच्चे जब दौड़ते, पतंग उड़ाते और किलकारियाँ मारते हैं तो सारा वातावरण संगीतमय हो उठता है।
3. यह श्रव्य बिंब (Auditory Imagery) है — दिशाएँ स्वयं मृदंग बन जाती हैं, यानी पूरा ब्रह्मांड बच्चों की उमंग से भर जाता है।
4. इसमें मानवीकरण भी है — दिशाएँ मृदंग बजाती हैं, यानी प्रकृति भी बच्चों के उल्लास में भागीदार है।

उत्तर: दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का तात्पर्य है — बच्चों की किलकारियाँ और उमंग चारों दिशाओं में संगीत की तरह गूँज उठती हैं; पूरा वातावरण उत्सव और लय से भर जाता है।

प्रश्न 7

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए — (क) छतों को भी नरम बनाते हुए दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है?

हल

नहीं, जब पतंग सामने हो और मन उत्साह से भरा हो तो छत कठोर नहीं लगती।
कवि की पंक्ति 'छतों को भी नरम बनाते हुए' इसी भाव को व्यक्त करती है —
1. उत्साह और रोमांच में तन-मन का भान नहीं रहता: जब बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों पर दौड़ते हैं, तो उनकी एकाग्रता और उमंग इतनी तीव्र होती है कि वे छत की कठोरता भूल जाते हैं।
2. मन की भावना वातावरण को बदल देती है: बचपन में खेल और उत्साह के क्षणों में कोई भी कठोर स्थान नरम लगने लगता है — यह मन की शक्ति है।
3. यह बच्चों की तल्लीनता का प्रमाण है: 'सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत' उन्हें गिरने से बचाता है — उनका रोमांच ही उनका कवच है।
इस प्रकार यह पंक्ति बताती है कि तीव्र लगन और उत्साह में कोई भी बाधा नहीं आती — न छत की कठोरता, न ऊँचाई का डर।

उत्तर: नहीं — पतंग उड़ाते समय बच्चों का मन इतने रोमांच और उत्साह से भरा होता है कि छत कठोर नहीं लगती। उनकी तल्लीनता और उमंग हर कठोरता को नरम कर देती है।

प्रश्न 8

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए — (ख) अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से और बच जाते हैं तब तो और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं। खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

हल

कविता की इन पंक्तियों में कवि ने बच्चों के माध्यम से जीवन का एक महत्वपूर्ण सत्य कहा है —
खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद व्यक्ति —

1. और अधिक निडर और साहसी हो जाता है: जैसे बच्चे छत के खतरनाक किनारे से गिरकर बचने के बाद 'और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं' — उसी तरह हर चुनौती पार करने के बाद आत्मविश्वास बढ़ता है।
2. भय समाप्त हो जाता है: एक बार जब हम डर का सामना कर लेते हैं, तो वह भय छोटा लगने लगता है। 'सुनहले सूरज के सामने आना' — नई रोशनी और नए साहस का प्रतीक है।
3. अनुभव से परिपक्वता: हर संघर्ष हमें मजबूत बनाता है — 'पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है / उनके बेचैन पैरों के पास' — यानी दुनिया उनके पास आती है, वे दुनिया के नहीं।
4. जीवन को उत्सव मानने का भाव: मुश्किलों के बाद जो विजय मिलती है, वह जीवन को उत्सव की तरह जीने की प्रेरणा देती है।

यह पंक्तियाँ बताती हैं कि संघर्ष और खतरे से गुजरकर ही असली साहस और आत्मशक्ति प्राप्त होती है।

उत्तर: खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद व्यक्ति और भी निडर, साहसी और आत्मविश्वासी हो जाता है — जैसे बच्चे गिरकर उठते हैं और 'और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।'

प्रश्नावली 2.2 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर आपके मन में कैसे खयाल आते हैं? लिखिए।

हल

आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मन में जो खयाल आते हैं —

1. बचपन की याद: रंग-बिरंगी पतंगें देखते ही मन बचपन की गलियों में पहुँच जाता है — वे दिन जब हम भी पतंग उड़ाते थे, किलकारियाँ मारते थे।
2. स्वतंत्रता का बोध: आसमान में उड़ती पतंग स्वतंत्रता और खुली सोच की प्रतीक लगती है — काश हम भी बंधनों से मुक्त होकर ऐसे उड़ सकते!
3. जीवन का प्रतीक: पतंग की डोर — जीवन की उस सीमा की तरह लगती है जो हमें जमीन से जोड़े रखती है, भले ही हम ऊँचाइयों को छूते हों।
4. प्रकृति से एकता: रंग-बिरंगी पतंगें नीले आकाश में ऐसी लगती हैं जैसे आकाश में इंद्रधनुष खिल गया हो।
5. उमंग और उत्साह: बच्चों की किलकारियाँ, उनका उत्साह — देखकर मन स्वयं ही हल्का और प्रसन्न हो उठता है।

उत्तर: रंग-बिरंगी पतंगें देखकर बचपन की स्मृतियाँ जागती हैं, स्वतंत्रता का बोध होता है, और जीवन की सीमाओं के बीच ऊँचाइयों को छूने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न 2

'रोमांचित शरीर का संगीत' का जीवन के लय से क्या संबंध है?

हल

कवि ने लिखा है — 'उस समय गिरने से बचाता है उन्हें / सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत'।
'रोमांचित शरीर का संगीत' और जीवन की लय का संबंध —

1. रोमांच ही जीवन की लय है: जब शरीर रोमांच से भर जाता है — जब हम पूरी तन्मयता से कुछ करते हैं — तो वह अनुभव संगीत की तरह लयबद्ध हो जाता है। यही जीवन की असली लय है।
2. संगीत = समन्वय और संतुलन: जिस प्रकार संगीत में सभी स्वर एक लय में बँधे होते हैं, उसी तरह रोमांचित अवस्था में शरीर के सभी अंग — पाँव, हाथ, आँखें, मन — एक लय में काम करते हैं और बच्चा गिरते-गिरते बच जाता है।
3. जीवन का उत्सव: रोमांच और उत्साह से जीना ही जीवन की सच्ची लय है। जो व्यक्ति भय को जीतकर उत्साह से जीता है, वह जीवन के संगीत को समझता है।
4. स्वाभाविकता: जिस तरह संगीत की लय अपने आप बनती है — उसी तरह बच्चों का रोमांचित शरीर स्वाभाविक रूप से संतुलन बना लेता है — यह जीवन की सहज लय का प्रमाण है।

उत्तर: 'रोमांचित शरीर का संगीत' जीवन की उस लय का प्रतीक है जब पूरी तन्मयता और उत्साह से जीने पर शरीर-मन एकसाथ काम करते हैं — जैसे संगीत में सभी स्वर लयबद्ध होते हैं।

प्रश्न 3

'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं? चर्चा करें।

हल

यह पंक्तियाँ अत्यंत व्यंजनापूर्ण हैं — 'पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज एक धागे के सहारे'।

1. धागे की दोहरी भूमिका: धागा पतंग को थामता है और साथ ही बच्चे को पतंग से जोड़ता है। जब पतंग ऊँचाई पर होती है, तो उसकी धड़कन — यानी उसका खिंचाव और उड़ान — बच्चे को एक अजीब संतुलन देती है।
2. ऊँचाई की अनुभूति: पतंग की 'धड़कती ऊँचाइयाँ' — यानी पतंग ऊपर-नीचे होती है, जिससे डोर में एक स्पंदन आता है। यह स्पंदन बच्चे के हाथ से होता हुआ उसके पूरे शरीर में फैलता है और उसे जीवंत और रोमांचित रखता है।
3. मानसिक थाम: पतंग केवल शारीरिक रूप से नहीं, मानसिक रूप से भी बच्चों को थामती है — उनका ध्यान खतरे से हटकर पतंग पर केंद्रित रहता है, इसलिए वे छत के खतरनाक किनारे पर भी संतुलन बना लेते हैं।
4. प्रतीकात्मक अर्थ: 'महज एक धागे के सहारे' — यह कहता है कि जीवन में जोड़ने वाला सूत्र चाहे जितना पतला हो, यदि उसमें ऊँचाइयों की धड़कन हो, तो वह बड़ी से बड़ी चुनौती में भी थामे रखता है।

उत्तर: पतंग का खिंचाव और ऊँचाइयों की धड़कन 'महज एक धागे के सहारे' बच्चों को शारीरिक और मानसिक संतुलन देती है — उनका ध्यान खतरे से हटकर पतंग पर रहता है, और यही उन्हें गिरने से बचाता है।